



सद्गुरु करणरे पर सद्गुरु त्थाग महा-महापाप

शास्त्रमते सद्गुरु करणरे पर सद्गुरु त्थाग महा-महापाप

शास्त्रसम्मत 24 थके 32 लक्षणयुक्त सद्गुरुकहे एकमात्र प्रथम थकेहे गुरु हिसाबे गुरुकरण करबे

(शास्त्रीय. 24 थके 32 लक्षण छाडा अन्य कोन कछि दखे सद्गुरु बचिार करा नसिदिध । एकमात्र शास्त्रीय. 24 थके 32 टिलक्षण युक्त व्यक्तिकेहे सद्गुरु बले बचिार करा अति आवश्यक, एछाडा अन्य कोनभाबे अथवा अन्य कोन कछि आचार-आचरण, पोशाक परछिछदे व्यवहार बधि वा बवित प्रकार व्यवहारकि अनुष्ठान दखे सद्गुरु बचिार करा नसिदिध करा आछे शास्त्रे) –ताहले भविष्यते कখনोहे गुरुकरणरे पर आध्यात्मिक परम उन्नतरि जन्य पुनराय. गुरुत्थाग करार प्रयोजन पडबे ना। कोन आश्रमयुक्त अथवा कोनसम्प्रदाययुक्त अथवा गृहस्थ अथवा सन्न्यासी अथवा वैष्णव वा शक्ति उपासक वा यकेनो उपासकी होन ना कोन शास्त्रसम्मत 24 थके 32 लक्षणहीन व्यक्तिके गुरु हिसाबे गुरुकरण ना कराय. अवश्यै श्रये, अर्थां याहार मध्ये प्रत्यक्ष साधनार फले शास्त्रसम्मत 24 थके 32 टिलक्षणरे मध्ये लक्षणयुक्त तार काछेहे एकमात्र गुरुकरण करा उचति।

তাই শাস্ত্র অনুসারে জীবনে পূর্ব-পূর্ব জন্মের সৌভাগ্যক্রমে যদি কোন ব্যক্তির শাস্ত্রসম্মত 24 থেকে 32 টি লক্ষণের মধ্যে লক্ষণযুক্ত সদগুরু প্রাপ্তি হয়, এবং সেই প্রাপ্তির পরেও যে ব্যক্তি মতবিভিন্ন বা কুবুদ্ধি বা কামনা বা প্রবৃত্তি/ভট্টবাদে আসক্তবিশত যদি কেউ সদগুরু করণের পর সদগুরু ত্যাগ করে সে অবশ্যই বহুজন্ম এবং কোটী যুগ পর্যন্ত নপিতাে যায়, এবং দুঃখময়, নরক যন্ত্রণা ভোগ করে। কিন্তু শাস্ত্র বধিান অনুসারে শাস্ত্রসম্মত 24-32 লক্ষণযুক্ত সদগুরু করণের পর সদগুরু ত্যাগ অবশ্যই মহা-মহাপাপ বলে কথিত আছে।

গুরুত্যাগাদ্ ভবনৈমত্য়ু মন্ত্রত্যাগাদ্ দরদিরতা ।

গুরু-মন্ত্রপরতি্যাগাদ্ রটৌরবং নরকং ব্রজৎ ॥

(মরুেতন্ত্র কুলার্ণবতন্ত্র)

গুরু ত্যাগ করলে মৃত্যু হয়, মন্ত্র ত্যাগ করলে দরদিরতা হয় । গুরু ও মন্ত্র ত্যাগ করলে 'রটৌরবং নরকং ব্রজৎ' রটৌরব নরকে গমন করে ।

প্রতপিদ্য গুরুং যস্তু মোহাদ্ বপিপ্রতপিদ্যতে ।

যুগকোটীসি নরকে পচ্যতে পুরুষাধমঃ ॥

(বরাহপুরাণ)

যে ব্যক্তি গুরুবরণ করিয়া মোহবশে তাঁহাকে ত্যাগ করে সেই পুরুষাধম কোটীযুগ পর্যন্ত নরক ভোগ করে ।